BYJU'S EXAM PREP

HISTORY: CLASS-6: SUMMARY

अध्याय 9: भारत और संसार

दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संपर्क :

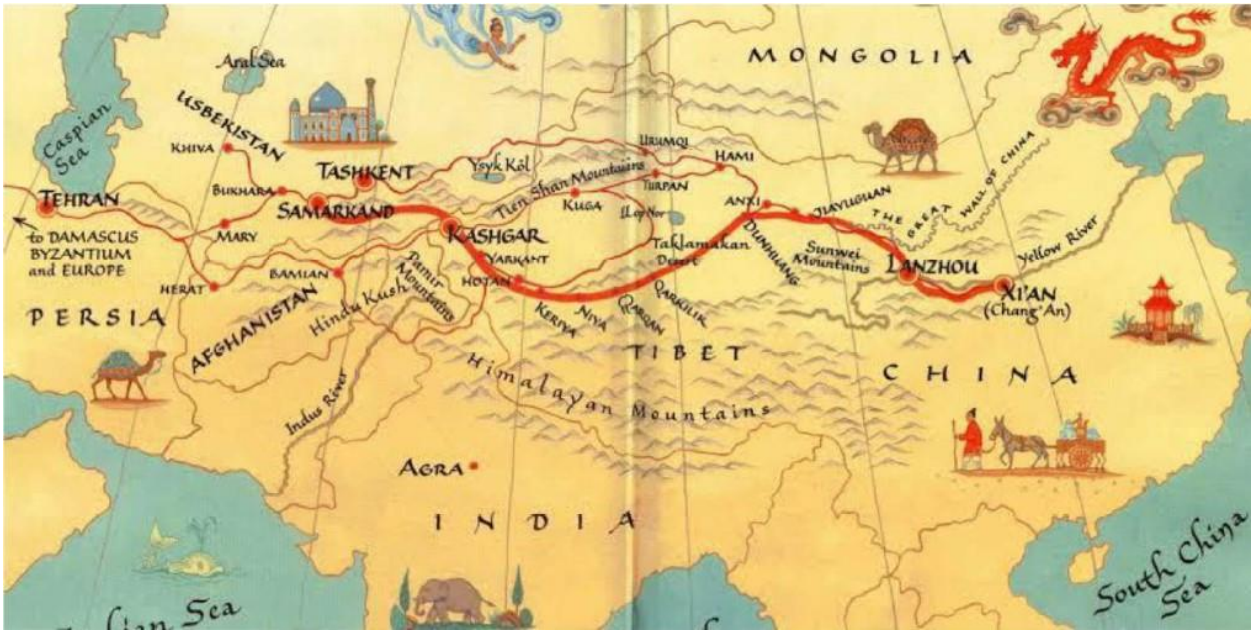

- सातवीं शताब्दी में, दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारतीय संपर्क काफी बढ़ गया था। इसकी शुरुआत भारतीय व्यापारियों ने अपने माल को बेचने और मसाले खरीदने के लिए इन द्वीपों की यात्रा करने से की थी। ये मसाले भारतीय व्यापारियों के लिए बहुत संपत्ति लाए क्योंकि वे पश्चिमी एशिया के व्यापारियों को बेचे गए थे।
- व्यापार बढ़ गया था और कुछ व्यापारी इन देशों में बस गए। धीरे-धीरे, दक्षिण-पूर्व एशिया के लोगों द्वारा भारतीय संस्कृति के कुछ पहलुओं को स्वीकार किया गया।
- सबसे शुरुआती संपर्क बर्मा (सुवर्णभूमि), मलाया (सुवर्णद्वीप), कंबोडिया (कंबोजा) और जावा (यवद्वीप) के साथ थे। इन स्थानों के भव्य मंदिर जो भारतीय मंदिरों के समान थे, जैसे कि कंबोडिया के अंगकोरवाट में, बड़ी संख्या में हिन्दू और बौद्ध मंदिरों का निर्माण किया गया था और साथ ही कई हिंदू रीति-रिवाजों का अभ्यास भी किया गया था।

भारत में अरबियों का आगमन

- तेरहवीं से सोलहवीं शताब्दी (1206-1526 ईस्वी) तक की अवधि में भारत में इस्लामी संस्थानों और इस्लामी संस्कृति का आगमन देखा गया।
- अरब की भौगोलिक स्थिति ने भारत और अरब के बीच व्यापार संपर्क को सुविधाजनक बनाया।
- इस्लाम अरब में जन्मा और जल्द ही एशिया और अफ्रीका के कई हिस्सों में फैल गया।
- यह पैगंबर मुहम्मद द्वारा प्रचारित किया गया था, जिन्होंने इसे अरब की जनजातियों को एकजुट करने के साधन के रूप में देखा था। वह यह भी मानता था कि वह मनुष्य को ईश्वर की सच्चाई बता रहा है।
- अरब का प्रभुत्व विशाल था और अरब अब पश्चिम एशिया की प्राचीन संस्कृतियों एवं ग्रीस और यूरोप की संस्कृतियों के बीच एक सेतु बन गया था। भारत ने, इस्लाम के प्रभाव को महसूस किया, जो अरबों द्वारा हमारे देश में लाया गया था। अरब भारत में 712 A.D में आये, सिंध पर विजय प्राप्त की और पश्चिमी भारत की और बढ़े, लेकिन राजस्थान के स्थानीय शासकों द्वारा इन्हें वापस खदेड़ दिया गया।
- इस प्रकार, आठवीं शताब्दी में, भारत में एक समृद्ध सभ्यता थी और लोग अच्छी तरह से रहते थे। भारतीय संस्कृति केवल भारत तक ही सीमित नहीं थी। विश्व के अन्य लोगों को भी इसके बारे में पता था। कभी-कभी, जब निकट संपर्क हो गए, तो उन्होंने भारतीय संस्कृति में भी योगदान दिया। अरबों ने भारत में न केवल इस्लाम को बल्कि कई नए सांस्कृतिक प्रभावों को भी पेश किया, जो बाद की सदियों में विकसित होने थे। इस प्रकार, एक तरफ, भारत अपनी संस्कृति का निर्यात कर रहा था, और दूसरी तरफ, वह बाहरी संस्कृतियों का आयात भी कर रहा था।